दीवार पर बदली ईंट

चीन ने अमेरिका सहित पूरी दुनिया के मुकाबले अपनी आर्थिक धाक कायम करने के लिए कमर कस ली है

आंखों देखी

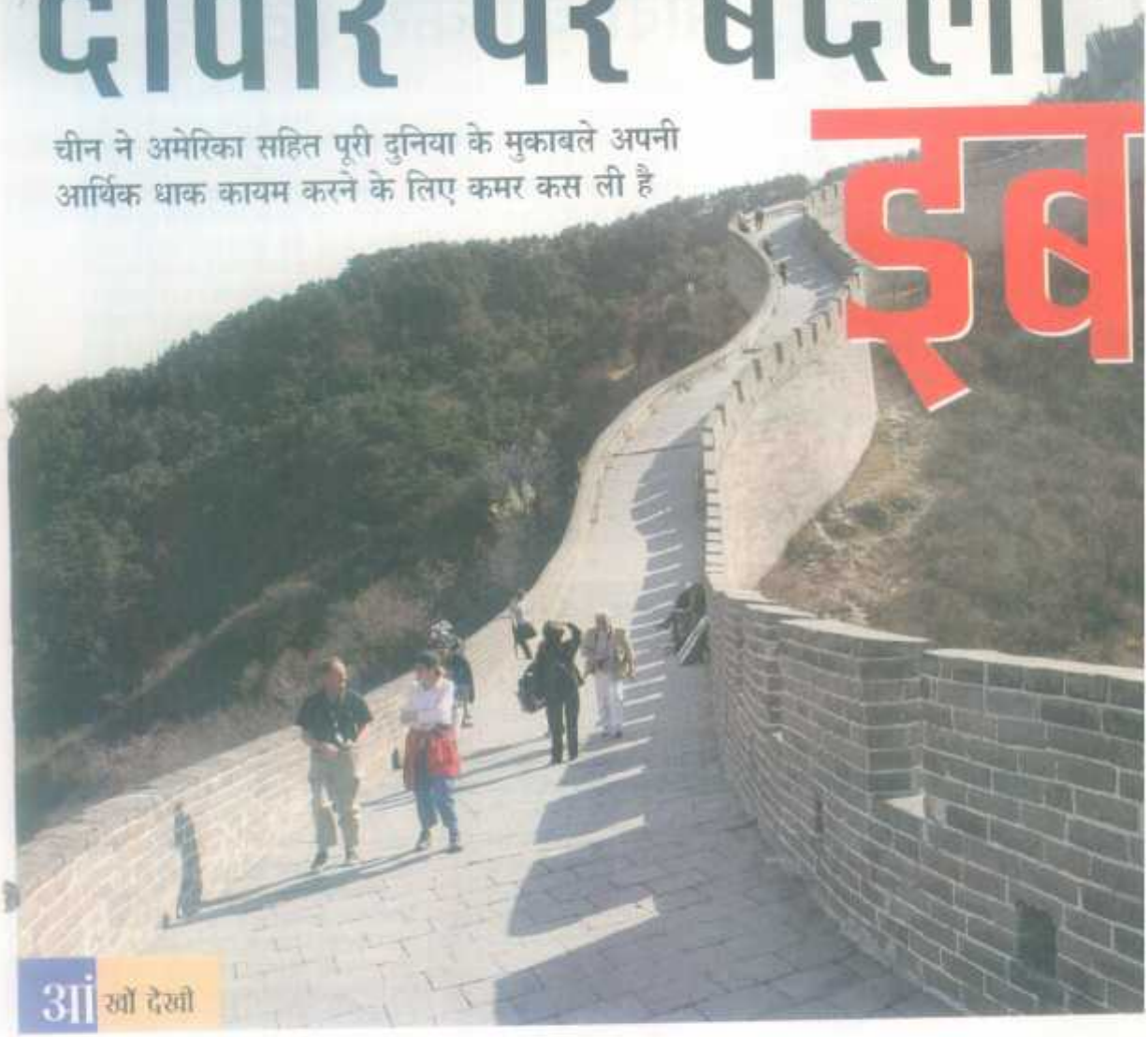

चीन से लौटकर आलोक मेहता

सचमुच यहां तो बहुत कुछ बदल गया है। दिल्ली में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता सीताराम येचुरी अथवा प्रगतिशील लेखक संघ के पुराने प्रगतिशील लेखक के बदले रंग-ढंग और उदारवादी अर्थव्यवस्था के समर्थक सलाहकारों से बढ़ते तालमेल पर होने वाली चर्चाएं कम हो जानी चाहिए। शंघाई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से घरेलू हवाई अड्डे तक पहुंचने में दिखी औद्योगिक साम्राज्य की भव्यता पर आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि शंघाई तो एक सौ साल पहले भी बड़ा व्यापारिक केंद्र था। हां, एशिया के सबसे ऊंचे (दुनिया में तीसरे नंबर का) टॉवर, ओरिएंटल पर्ल टावर जैसी ऊंची इमारतें भले ही 10 वर्षों में खड़ी हुई हैं, 1924 में भी शंघाई जैसे 24 मंजिले होटल एशिया में कम थे। लेकिन ऐतिहासिक राजधानी बीजिंग तो अब पहचानी नहीं जा रही है। सन 1991 के बाद मास्को, बर्लिन या अपनी दिल्ली में भी बहुत कुछ बदल गया है। सितंबर 1993 में अपनी पहली चीन यात्रा के दौरान सूरज की पहली किरणों के साथ राजधानी बीजिंग में सड़कों पर सैकड़ों साइकिलें दौड़ते देखकर सुखद अनुभूति हुई थी कि दुनिया के एक बड़े ताकतवर देश की राजधानी अमेरिका या यूरोप से भिन्न है। इस बार जून 2005 में साइकिलों के बजाय दुनिया की हर बड़ी कंपनी की आलीशान रंग-बिरंगी कारों की होड़-सी देखकर समझ में आ गया कि चीन की सरकार और जनता ने न्यूयार्क-वाशिंगटन, लंदन-टोक्यो और मास्को-दिल्ली को हर मोर्चे पर पीछे छोड़ देने का संकल्प ले लिया है। यही कारण है कि लगभग दस

रत

छाया: [illegible]

दिनों में चीन के चार-पांच प्रमुख शहरों की यात्रा करते समय अपनी भाषा, संस्कृति, सामरिक शक्ति पर दृढ़ विश्वास वाले चीनी नागरिक मिले जो कुछ वर्षों में अमेरिका सहित विश्व के सभी देशों के मुकाबले अपनी आर्थिक धाक मजबूत करना चाहते हैं।

बीजिंग, शंघाई, नानिंग, कुनमींग या छोटे कस्बे हैयान काउंटी या गांव जैसे स्थान में नई पीढ़ी के जिस व्यक्ति से भी बात की, उसने पुरानी परंपरा या सामाजिक सुरक्षा की संपूर्ण गारंटी वाली बंद कम्युनिस्ट अर्थव्यवस्था बदलने पर असहमति व्यक्त नहीं की। चीन में क्रांति के जनक माओ की समाधि पर हजारों पर्यटक जरूर आते हैं, लेकिन बीजिंग में महत्वपूर्ण दायित्व संभालने वाले ऐसे कई युवा अधिकारी मिले, जो न कभी उस समाधि पर गए और न ही उनके विचारों वाली अर्थव्यवस्था की पैरवी करने को तैयार हुए। बीस साल पहले जहां छात्रों को अपनी पसंद की उच्च शिक्षा या अपने मूल निवास से दो सौ किलोमीटर दूर जाकर रहने के लिए 'सरकारी अनुमति' की आवश्यकता होती थी। अब लाखों छात्र राष्ट्रीय स्तर की खुली प्रतियोगिता में बैठते हैं और अंकों की योग्यता के आधार पर कॉलेज-विश्वविद्यालय में प्रवेश ले रहे हैं। बीजिंग और कुनमींग में ऐसे परीक्षा केंद्रों के बाहर माता-पिताओं की भारी भीड़ देखने को मिली। संपन्न राज्य युनान में इस बार 60 लाख छात्रों ने उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश-परीक्षा दी और केवल 30 लाख को प्रवेश मिल पा रहा है। अब भी सरकार की कठोर परिवार-नियोजन नीति के कारण हर दंपति की अपनी इकलौती संतान को सर्वाधिक शिक्षित और सुविधा संपन्न बनाने की प्राथमिकता चेहरों पर दिखाई देती है। केवल बीजिंग में ही अंग्रेजी सिखाने वाले सैकड़ों गैर सरकारी केंद्र खुल गए हैं और दो लाख छात्र अंग्रेजी सीख रहे हैं। कोका कोला और पश्चिमी गीत-संगीत के आकर्षण के साथ युवक-युवतियों के अमेरिका जाने के सपने और अपने देश को उससे आगे बढ़ाने के लक्ष्य की बात ही सुनने को मिलती है। उद्योग-धंधे में विदेशी पूंजी के निवेश पर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के नेता बड़े-बड़े आंसू बहाने लगते हैं लेकिन चीन के कम्युनिस्ट नेता अधिकाधिक क्षेत्र में विदेशी पूंजी निवेश का स्वागत करते हुए उसे पाने के लिए पूरी ताकत लगा रहे हैं। बीजिंग में राष्ट्रीय विकास और सुधार आयोग के उप महानिदेशक काओ युशु ने बातचीत के दौरान दावा किया, 'सन् 2004 में 60 अरब 60 करोड़ अमेरिकी डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी पूंजी निवेश चीन में हुआ। इस वर्ष के पहले पांच महीने में 22 अरब 40 करोड़ डॉलर की पूंजी लग चुकी है और यह राशि 65 अरब डॉलर पहुंच जाएगी। इससे हमारे औद्योगिक-आर्थिक विकास में तेजी आ रही है। औद्योगिक उत्पादन बढ़ाकर ही हम दुनिया के हर कोने में 'मेड इन चाइना'

ऐतिहासिक दीवार के बावजूद दुनिया से बढ़ती नजदीकियां (बाएं), कुनमींग के पास फूलों की सबसे बड़ी मंडी (ऊपर) और पर्यटकों के आकर्षण के लिए बंदर का सहारा

ऐसे कई युवा अधिकारी मिले जो न कभी माओ की समाधि पर गए, न ही उनके विचार माने।